यूनानी आक्रमणों का भारतीय प्रतिरोध

*डॉ. सोमेश कुमार सिंह

शोध–सारांश

आत्मरक्षा की भावना और स्वत्व विस्तार की इच्छाओं ने युद्ध को जन्म दिया होगा। वैचारिक और स्वार्थो की टकराहट भी युद्ध के कारण रहे होगें। प्राचीन भारत में हमें अनेक युद्धो का उल्लेख मिलता है। रामायण, महाभारत के युद्ध के बाद हमें कुछ विदेशी आक्रामणकारियों द्वारा भारत पर थोपे गये युद्धो की जानकारी प्राप्त होती है। इन युद्धो के शक व यूनानी आक्रामण प्रमुख थे। शको के आक्रमणों ने विदेशियो के लिये आक्रमण के द्वारा खोल दिये। भारत पर सर्वप्रथम विदेशी आक्रमण ईरान के शासक डेरियस द्वारा किया गया था। यह आक्रमण 516 ई.पू. के आस–पास था। शको के उपरान्त दूसरा महत्त्वपूर्ण आक्रमण यूनानियो का था जो शक आक्रमण की तुलना में अधिक व्यापक था। इस यूनानी आक्रमण का नेतृत्व सिकंदर ने किया था। 326 ई.पू. भारत पर आक्रमण किया। सिकंदर का आक्रमण भारत के इतिहास की महत्त्वपूर्ण घटना है। झेलम–व्यास नदियों तक उसके आक्रमणो नें अफगास्तिान, पंजाब, सिंध के अधिसंख्यक राजाओं को प्रभावित किया था परन्तु सिकंदर के लिये भारत विजय आसान नहीं थी। भारत में उसे कड़े प्रतिरोध का सामना करना पड़ा। भारतीयों के कड़े प्रतिरोध का ही कारण था कि सिकंदर ने सेनापतियो व सेना ने झेलम के पार युद्ध करने से इंकार कर दिया था व सिकंदर को वापस लौटने को विवश कर दिया था। भारतीयो की एकता में कमी कुछ राजाओं द्वारा सिकंदर का समर्थन आदि से सिकंदर को आशिंक सफलता अवश्य मिली थी। परन्तु भारतीयो के शोर्य, साहस ने यूनानियो को वापस लौटने के लिये मजबूर कर दिया था।

शब्द संकेतः– यूनानी, हेरोडोटस, आम्भी, पौरस, गणराज्य, झेलम, सिंध, जौहर, छत्रप

पारसीक आक्रमणो ने विदेशियो के लिये भारत आक्रमण के द्वार खोल दिये। पारसिको से पूर्व हमें विदेशी आक्रमणों की जानकारी प्राप्त नहीं होती परन्तु पारसीको के बाद उन्ही रास्तों से अनेको आक्रमण कालान्तर मे भारत भू पर होने लगे। पारसीको के आक्रमण के बाद भारत पर दुसरा महत्त्वपूर्ण आक्रमण यूनानियों का था। यूनानी आक्रमणो का नेता सिंकदर था जो पारसीक आक्रमण की तुलना से अधिक विस्तृत व भयावह था। नव आक्रान्ता सिंकदर (356–323ई.पू.) मकदूनिया के शासक फिलिप का पुत्र था। 336 ई.पू. फिलीप की हत्या कर दी गई। फिलिप की हत्या के बाद सिकन्दर 20 वर्ष की अवस्था मे मकदूनिया अथवा मेसोडोनिया का शासक बना। सिंकदर अत्यन्त महत्वाकांक्षी था। वह विश्वविजयाी बनना चाहता था। शासक बनते ही उसने विश्वविजय की अपनी महत्त्वाकांक्षा को पूरा करना प्रारम्भ किया। सर्वप्रथम उसने अपनी स्थिति यूनान मे मजबूत की तथा यूनान के नगर राज्यो को जीता। अपने देश में अपने को मजबूत बनाने के बाद वह मिश्र की ओर बढा व पश्चिमी एशिया पर अधिकार कर लिया। 320ई.पू. में उसने ईरान के हखामनी साम्राज्य के सम्राट को पराजित किया तद्पश्चात व बैक्ट्रिया प्रदेश भी उसके अधिकार में आ गया। ईरान विजय के बाद सिंकदर के लिये आकर्षक का केन्द्र रहा होगा क्योंकि हेरोडोटस जैसे यूनानी लेखक भारत के वैभव व सम्पन्नता से परिचित थे। इन यूनानी विजय की उसकी योजना ओर भी अधिक

प्रबल हुई होगी। सिंकदर विगत भारत विजेताओं की उपलब्धियो से भी प्रभावित हुआ होगा। उनका अनुसरण कर वह पूर्व विजेताओं की उपलब्धियो से भी आगे निकलना चाहता था।

अतः सिंकदर ने 326ई.पू. भारत की ओर कूच किया। सिंकदर की भारत विजय इतनी सहज भी न थी। यद्यपि भारत में अनेक गणतंत्र व राजतत्रं थे। इन राज्यो मे परस्पर एकता की कमी थी परन्तु उन पर विजय पाना इतना आसान नही था। अफगानिस्तान, पंजाब और सिंध के असंख्य राजा और गणराज्य जातियां अपनी स्वतत्रंता के लिये कटिबद्व थी। इन जातियो को अपने क्षेत्र से प्रेम था। यद्यपि छोटे–छोटे राजतत्रं तथा स्थानीय जातियां सिंकदर की अनुशासित व अनुभवी सेनो के समकक्ष कुछ भी नहीं थी परन्तु उन जातियो ने यह जानते हुए भी कि उनका पराजय निश्चता है बिना लड़े झुकने से इंकार कर दिया। यूनानी लेखको ने इन जातियो की बहादुरी व देशभक्ति की प्रंशसा की है। भारत की इन महान जातियों की लाशो के ऊपर से गुजरने के बाद ही सिंकदर आगे बढ सका था। विदेशी आक्रांताओ के आक्रमणो को रोकने के लिये इन जातियो ने जो अद्म्य वीरता व साहस दिखाया था वह भारत के इतिहास को गौरवान्वित करता है। सिंकदर को यहाँ एक–एक इंच जमीन हेतु खूनी संघर्ष करना पड़ा।

सिंकदर के आक्रमण का वीरतापूर्वक सामना करने वाली भारत की वीर जातियो का विस्तृत इतिहास हमें नही मिलता। यूनानी इतिहासकारो द्वारा वर्णित उल्लेखो से भारतीय वीरो के गौरवशाली प्रतिरोध की सूचना हमें प्राप्त होती है। उनमे से कुछ का ही उल्लेख हमें मिलता है।

327 ई.पू. सिंकन्दर ने हिंदुकुश पर्वत पार किया और कोहिदामन घाटी में प्रवेश किया। यहाँ अपनी स्थिति सुदर्ढ़ करने के पश्चात सिंकदर आधुनिक जलालाबाद के पश्चिम में स्थित निकाई नामक नगर की ओर रवाना हुआ। तक्षशिला नरेश आम्भी ने बिना किसी प्रतिरोध के सिकदंर के समक्ष समर्पण कर दिया। भारतीय लिखित इतिहास में यह प्रथम देशद्रोही है जिसने अपने स्वार्थ हेतू देश हितों की परवाह नही की थी।

आम्भी के आत्मसमर्पण ने सिकदंर की सेना का भारत प्रवेश का द्वार खुल गया। हिंदुकुश के उत्तर में शशिगुप्त नामक एक अन्य भारतीय नरेश ने भी सिकदंर की अधीनता स्वीकार की तथा उसकी सहायता का वचन दिया।[1] आम्भी व शशिगुप्त की सहायता ने सिकदंर के आत्मविश्वास को और अधिक बढा दिया। भारत को शीघ्र जीतने के उद्देश्य से उसने यहाँ अपनी सेना को दो भागो में विभक्त किया। एक सेना का नेतृत्व हेफेस्तियान तथा पर्डियस नामक सेनापतियों को सौफा। इस सेना को सिंध नदी के किनारे–किनारे खैबर दर्रे होते हुए सिंधु नदी तक पहुँचना था। सेना का दूसरा भाग उसने स्वयं संभाला। उसने स्वात व कुनार नदी घाटी के पर्वतीय दुर्गम क्षेत्रो मे जाने का निश्चय किया।

सिकदंर के प्रथमदल को मार्ग में पुस्कलावती के राजा हस्ती ने तीस दिन तक युद्व करने के बाद यह भारतीय राजा अपनी स्वतत्रंता की रक्षा के लिये लड़ता हुआ मारा गया।[2] सिकदंर की यूनानी सेना के भीषण प्रतिरोध की यह घटना इतिहास मे वह स्थान प्राप्त न कर सकी जितना उसको प्राप्त करना चाहिए था। हस्ती भारतीय इतिहास के सम्भवतः पहले शहीद शासक थे जिन्होने यूनानियो का प्रतिरोध करते हुए मृत्यु का वरण किया था। यूनानी सेना हस्ती को पराजित करके सिंधु तट तक पहुँच गई।

सिकदंर के पर्वतीय दुर्गम रास्तो पर अनेक स्थानिय लड़ाकु जातिया रहती थी। ऐरियन से ज्ञात होता है कि इन पर्वतीय प्रदेशो में एस्पेसियन, गौराइन तथा अस्सेकेनियन रहते थे।[3] सिकदंर की सेना का सर्वप्रथम सामना स्वाधीनता प्रिय जाति अस्पेशियनो से हुआ। विमल चंद पाण्डे एस्मेसियन और अक्सकेनियन को अश्मक का ही रूपातंर मानते है। इस अश्मक का उल्लेख हमें वराहमिहिर मे भी मिलता है।[4]

आस्पेसियन राज्य काबुल नदी के उत्तर पहाड़ी भागो में स्थित था। यहाँ खोईज अथवा आधुनिक अलिशंग तथा यूअस्पला अथवा कुनार नदियां प्रवाहित होती थी। इस राज्य का नाम ईरानी शब्द अस्प तथा संस्कृत शब्द अश्व या अश्वक(घोड़ा) से लिया गया है।[5] यूनानी लेखको ने इनको हाई पाई (सामन्त) यह राज्य गुप्तकाल तक अस्तित्व में था। मस्सग इसकी राजधानी थी जिसके चारों तरफ सुर्दढ दीवार थी। सिकंदर को इस दीवार को गिराने में काफी कठिनाये आई थी।[6] इनके पास 20 हजार अश्वारोही, 30 हजार पैदल तथा 30 हाथी थे। कड़े व भीषण प्रतिरोध के बाद अश्मक पराजित हुए। अश्वको का यूनानी प्रतिरोध इतना प्रबल था कि रणस्थल में स्वयं सिकंदर की भुजा को भेदता हुआ शत्रु एक शल्य निकल गया।[7] समस्त नगर धाराशाही कर दिया गया तथा सभी निवासी तलवार के घाट उतार दिये गए।[8] शेष बचे अश्मको ने पहाड़ो मे शरण ले ली।

कार्टियस के विवरण से ज्ञात होता है कि अश्वको को पराजित करने के बाद सिकंदर न्यासा नगर की ओर बढा। न्यासा या नीसा क्षेत्र में एक पर्वतीय प्रदेश था। यहाँ कुलीन शासन तत्रं था। यहाँ 300 सदस्यो की शासन परिषद थी।[9] नीसी लोगो ने सिकंदर का कोई प्रतिरोध नही किया और उसकी सहायता हेतु 300 घुड़सवार भी भेंट किये। नीसी लोगो के बारे मे अधिक जानकारी प्राप्त नहीं होती। सम्भवतः ये यूनानियो के ही कोई वंशज थे। तत्पश्चात सिकदंर गुरेअन्स प्रदेश पहुँचा।[10] यह भाग आस्पेसियन और अस्सकेनियन राज्य के मध्य स्थित था। इस जाति ने भी सिकंदर का कड़ा प्रतिरोध किया था। परन्तु वे पराजित हुए। इस प्रदेश को जीतने के बाद सिकंदर अश्वको के राज्य पहुँचा। यूनानी लेखको ने इसे अस्सकैनोज कहा है। अस्सकेनियन राजा के पास 20 हजार घुड़सवार व 30 हजार पैदल सेना थी। यहाँ के राजा को यूनानीयो ने अस्सकैनोज कहा है।[11] सिकंदर का सामना किया किन्तु पराजित हुए।

तत्पश्चाात सिकंदर पुष्कलावती राज्य पहुँचा। यह सिंधु नदी के पश्चिम में स्थित था। यह गांधार की प्राचीन राजधानी थी। यहाँ के लोगो ने सिकंदर की अधीनता मान ली।

सिकंदर को अब भारत आये हुए काफी समय बीत चुका था। अभी तक सिकंदर ने सिंध नदी को पार नहीं किया था। अभी तक सारे युद्व सिंधु नदी के पश्चिम मे हुए थे। 326 ई.पू. सिकंदर ने सिंधु नदी पार की तथा तक्षशिला पहुँचा। वहाँ पहुँचकर उसने आस पास के राजाओं से अधीनता स्वीकार करने को कहा।

झेलम व चिनाब के बीच का प्रदेश कैकय पौरस कहा जाता था।[12] झेलम व चिनाब के बीच के राजा जिसे पौरस या पुरू कहा जाता था सबसे अधिक शक्तिशाली था। जब सिकंदर के दूत ने उसे सिकंदर से मिलने को कहा तो उसका जवाब था मै जरूर मिलुंगा। अपनी सीमा पर और सेना के साथ। पौरस का राज्य विस्तृत था। और उसके अभ्युदय ने पड़ौस के राजाओं के हद्वय मे खलबली मचा रखी थी। पौरस ने सिकंदर के आक्रमण को रोकने का प्रयास करना चाहिए था पर वह अपने युद्व की तैयारी झेलम तट पर ही करता रहा ताकि उसके राज्य पर आक्रमण होने पर उसक प्रतिकार किया जा सके। पौरस की यह नीति आक्रमक ना होकर रक्षात्मक थी। पौरस की यह भूल व अदूदर्शिता थी। उसने सिकंदर को तैयारी का भी अवसर दिया। युद्व से पूर्व सिकंदर ने अपने दूत के माध्यम से पौरस के समक्ष आत्मसमर्पण का प्रस्ताव भेजा। कार्टियस इस प्रस्ताव की पुष्टि करता है फिरदौसी कृत शाहनामा इस घटना का उल्लेख मिलता है।

यूनानी इतिहासकारो ने इस युद्व का विस्तृत वर्णन किया है तथा भारतीय सैनिको तथा पौरस की वीरता की प्रशंसा की है।

झेलम के पश्चिमी किनारे पर सिकंदर ने अपना शिविर स्थापित किया। दूसरी तरफ पौरस भी अपनी सम्पूर्ण सेना के साथ युद्वभूमि मे तैयार था। पौरस के चुने हुए वीर सैनिक राष्ट्रीय संकट का सामना करने को तत्पर थे। मई के

महिने में झेलम के बाढ़ की स्थिति थी। एरियन के विवरण से ज्ञात होता है कि पौरस के पास 4000 घुड़सवार, 300 रथ, 200 हाथी, 30000 पैदल थे। इसके अतिरिक्त 20 रथ व 2000 पैदल सैनिक उसके पुत्र के साथ थे। इतनी विशाल सेना का सामना करने के लिये सिकंदर को तैयारियो की जरूरत थी। जहाँ तक सिकंदर की सैन्य ताकत का सवाल था उसके पास अश्वारोही अधिक थे। कहा जाता है कि 120000 व्यक्ति सिकंदर के सैनिक शिविर मे थे किन्तु इस संख्या मे भृत्य,व्यापारी, वैज्ञानिक मकदूनिया के सैनिको की एशियाई पत्नियां और उनकी संताने सम्मिलित है।[13] टार्न के अनुसार युद्व करने वाले सैनिको की वास्तविक संख्या 35000 ही थी। सिकंदर अच्छी तरह जानता था कि पौरस जैसे सावधान, वीर शक्तिशाली राजा के समक्ष नदी पार करना खतरो से खाली नहीं है। अतः उसने पौरस का ध्यान भटकाने के लिए अपनी सेना को कई भागो मे विभाजित कर दिया। सिकंदर यह भी चाहता था कि शत्रु को यह विश्वास हो जाए कि सिकंदर नदी के शांत होने पर ही नदी पार करेगा। सिकंदर की यह योजना सफल भी हुई। पौरस को यह विश्वास हो गया है कि सिकंदर रात्रि को नदी पार नहीं करेगा। पौरस की सेना उदासीन हो गई।

सिकंदर ने युद्व की तैयारी बेहद तरीके से की। उसने अपने शिविर से 16 मील ऊपर नदी की ओर एक ऐसा स्थान चुना जहाँ से नदी को आसानी से पार किया जा सकता था तथा जो पौरस के शिविर से काफी दूर था। इस रणनीति का एक उद्देश्य यह भी था कि नदी पार करने की गतिविधि से पौरस के शिविर को अनभिज्ञ रखना था। बहुत से अन्य प्राकृतिक व मानवीय कारणो से भी पौरस के सैनिक सिकंदर की सैनिक गतिविधियों से अनभिज्ञ रहे।

सिकंदर ने अपनी सैनिक रणनीति अत्यंत सावधानीपूर्वक बनाई थी। उसने अपने प्रमुख सैनिक शिविर में एक विश्वसनिय सेना को इस उद्देश्य से छोड़ा था कि वे जब तक उसी शिविर मे रहे जब तक कि नदी की दूसरी तरफ हाथी दिखाई देते रहें तथा ज्यों ही हाथी हटाए जाये ये सेना शीघ्रातिशिघ्र नदी पार करने की चेष्टा करें।

सिकंदर ने 12000 सैनिको के साथ झेलम नदी को पार किया और अपनी अश्वारोही सेना का नेतृत्व किया जब भारतीय सैनिको को सिकंदर ने नदी पार करने की सूचना प्राप्त हुई तब तक देर हो चुकी थी। भारतीय सैनिक भी यूनानी सेना का प्रतिरोध करने को तैयार हो गए। यूनानियो से प्रथम संघर्ष में पौरस पुत्र की पराजय हुई। 100 भारतीय धराशाही हुए।[14] शीघ्र पौरस सिकंदर का सामना करने आगे बढे। उन्होनें हाथियो को अग्रिम पंक्ति में रखा परन्तु विजय सिकंदर को प्राप्त हुई थी। विशालकाय हाथी पर आरुढ़ पौरस आखिरी क्षण तक लड़ते रहे। पौरस बंदी बनाकर सिकंदर के समक्ष प्रस्तुत किये गए। सिकंदर ने पौरस से पूछा था कि वह किस प्रकार के व्यवहार की आशा करता है। उसने अदम्य साहस और निःसंकोच सिकंदर को जवाब दिया नृपोचित व्यवहार की।[15] विमल चंद पांडे ने सिकंदर पौरस संघर्ष को 326 ई.पू. होने की संभावना बताई है। विमल चंद पांडे का कथन है कि सिकंदर ने इस महत्त्वपूर्ण संग्राम की स्मृति में एक प्रकार की मुद्रा का प्रचलन किया जिस पर पोरस के हाथी का पीछा करते हुए उसको उछलते हुए अश्व पर प्रदर्शित किया गया है। इस प्रकार की दो मुद्राएं प्राप्त हुए है। सिकंदर ने पौरस को उसका राज्य वापस लौटा दिया। कुछ अन्य प्रदेशो को भी पौरस को सौंप दिया। प्लूटार्क के अनुसार इसमें 15 संघ राज्य उनके 5 हजार बड़े नगर तथा अनेक ग्राम थे।[16] इस विजय के तुरंत बाद सिकंदर ने युद्व में शहीद सैनिको का अंतिम संस्कार किया तथा यूनानी देवी–देवताओ की पूजा की। उसने 2 नगरो की स्थापना भी की। पहला नगर निकैया(विजय नगर) रणभूमि मे ही बसाया गया। दूसरा नगर झेलम नदी के दूसरे तट पर जहाँ सिकंदर का प्रिय घोड़ा बड़केफला मरा था। घोड़े के नाम पर ही इस नगर का नाम भी बड़केफला रखा गय।[17]

पौरस की विजय के बाद सिकंदर भारत में और आगे बढा। उसने चिनाब नदी के पश्चिम में स्थित ग्लाउसाई अथवा ग्लाउसनिकाइ नामक जाति पर आक्रमण किया। इस राज्य में 37 नगर थे जिन्हे जीत कर पौरस के राज्य में मिला दिया गया।

भारतीय विद्रोह – सिकंदर भारत के प्रदेशो को जीत भले ही रहा हो परन्तु उसकी विजयो को भारतीय मन स्वीकार नहीं कर रहे थे। सिकंदर अभी भारत के अन्य राज्यो के विजय की योजना बना ही रहा था कि पश्चिम भारत के भारतीय जिसमें अश्वको के प्रदेश सम्मिलित थे विद्रोह कर दिया। भारतीय स्वतंत्रता सैनानियो ने यूनानी क्षत्रय निकानोर की हत्या कर दी। इस विद्रोह को दबाने के लिए सिकंदर ने तक्षशिला के क्षत्रप तथा फिलिप को भेजा इस विद्रोह को दबा दिया गया। इसके बाद सिकदर ने चिनाब नदी पार करके गान्दारिस राज्य को जीता। यह राज्य गान्धार जनपद का ही पूर्वी भाग था तथा राजा पुरू का भतीजा यहाँ राज्य करता था।[18]

इस विजय के बाद सिकंदर ने रावी नदी को पार किया। रावी के पार अरिष्ठो, कठो, मलोइयों, क्षुद्रो के गणराज्य थे। इन गणराज्यों में कठ गणराज्य सर्वाधिक लड़ाकु व स्वतंत्रता प्रिय थे। अधीनता स्वीकार कने के स्थान पर कठ गणराज्य ने शहीद होने अधिक पसन्द किया। कठो ने सिकंदर का भयंकर प्रतिरोध किया। प्रतिरोध से क्रोधित सिकंदर ने संगल नगर को भस्मीभूत कर दिया। इसके विजयी सिकंदर कठो की सामूहिक हत्या कर दी। यूनानी विवरण के अनुसार 17 हजार व्यक्ति मारे गये व 70 हजार बंदी बना लिये गये।

तत्पश्चात सिकंदर ने व्यास नदी के तट पर आया। व्यास नदी का तट सिकंदर के विजय अभियान का चरम था। व्यास के आगे विशाल नन्द साम्राज्य था जिसकी शक्ति यूनानी सेना से कहीं अधिक थी किन्तु व्यास के तट पर सिकंदर की सेना भारतीय प्रतिरोधो से टूट चुकी थी। सिकंदर ने अपने सैनिको को आगे बढने के लिए समझाया व ओजस्वी भाषण दिया परन्तु उसके सारे प्रयास असफल रहे। विवश सिकंदर ने अपने सैनिको की वापसी के आदेश दिये।

सिकंदर ने अपनी विजित भूमि का सीमांकन 12 पत्थर की वेदिया स्थापित करके किया और जिस मार्ग से आया था उसी रास्ते से वापस लौटने लगा। ई.पू. 326 के नवम्बर मास मे प्रत्यावर्तन प्रारम्भ हुआ। सेना तीन भागो में होकर लौटी। जल सेना का नेतृत्व नियार्कस ने किया।

परन्तु भारतीय सिकंदर को सहीसलामत नही लौटने देना चाहते थे। लौटती सिकंदर की सेना को भारतीयो के कड़े प्रतिरोध का सामना करना पड़ा। मालव व क्षुद्रक जैसे गणराज्य आक्रान्ता का रणभूमि में स्वागत करने को तत्पर थे। सिकंदर ने मालवो के नगर पर अचानक आक्रमण कर दिया। निर्दोष लोग निर्दयतापूर्वक काट दिये गये। बहुत से लोग नगर छोड़कर चले गये। पीछा करके मालवो की हत्या कर दी गई। कहते है कि मालवो क्षुद्रको के संयुक्त प्रतिरोध से स्वयं सिकंदर बुरी तरह घायल हो गया। उनके राज्य के सभी नर–नारी बच्चे मौत के घाट उतार दिये गये।[19] एक अन्य जाति अग्गलसोई आर्जुनायन भी बड़ी बहादुरी के साथ सिकंदर से लड़ी। सिकंदर ने उनके एक नगर पर अधिकार कर लिया तब उसके 20 हजार नागरिक वीरतापूर्वक प्रतिरोध के पश्चात अपनी स्त्री बच्चो के साथ आग मे जल गए। भारतीय इतिहास में जौहर की यह पहली लिखित घटना है जिसकी भयावह पुनरावृति बाद में अनेक बार हुई।[20]

अपनी विजय के अंतिम दौर में सिकंदर ने सिंधु नदी के नीचे के प्रदेशो को जीता। यहाँ के मुसिक राज्य ने सिकंदर का सामना किया किन्तु पराजित हुआ। मुसिक के पड़ोसी सम्बोस ने भी सिकंदर से हार मान ली। किन्तु निचले सिंध में ब्राह्मणों का शक्तिशाली राज्य था। पंतजली भी बाह्मणक नामक जनपद का उल्लेख करते है (ब्राह्मणको नाम जनपद)[21] एरियन के उल्लेख से ज्ञात होता है कि ब्राह्मणो ने ही यूनानी हमलावर (सिकंदर) के खिलाफ जनता को उभाड़ा था।[22] उन्होने विदेशियो का विरोध करना जनता का धर्म बताया तथा जिन राजाओ ने सिकंदर की अधीनता स्वीकार की उन्हे देशद्रोही करार दिया।[23] परन्तु सिकंदर विरोधी सभी राजाओं को पराजित कर दिया गया। सिकंदर की आखिरी विजय पाटल की थी। यूनानियो के आगमन का समाचार सुनते ही यहाँ के नागरिको ने नगर

खाली कर दिया। सिकंदर ने यहां नया क्षत्रय नियुक्त किया। 325 ई.पू. सिकंदर पाटल से यूनान की ओर रवाना हुआ। जेड्रोसिया के रेगिस्तान को पार करके वह बेबीलोन पहुँचा। 323 ई.पू. इसी स्थान पर उसकी मृत्यू हो गई।

निस्कर्षः–

भारत पर यूनानी आक्रमण सिकंदर की विश्व विजय की कल्पना का एक भाग थी। परन्तु सिकंदर को भारत में वह सफलता प्राप्त न हो सकी जो उसे पूर्व में प्राप्त हुई थी। यहाँ की गणतांत्रिक जातियो ने सिकंदर का कड़ा मुकाबला किया था। आक्रान्ता के विरूद्व पुरू, अबीसेमर्स, मालव, क्षुद्रक, अस्टक, आस्पेशियन, अस्सेंकेनियन, ज्येष्ठपुर, कथाई, आक्सीड्रेक तथा मौसिकनोस के ब्राह्मणो ने कड़ा मुकाबला किया। मस्सगा में सिकंदर ने धोखे से लोगो का कत्ल किया। वहाँ उसने देखा कि यदि पुरूष युद्व के मैदान मे मारे जाते थे तो उनकी पत्नियां उनके हथियार लेकर शत्रुओं से जुझ पड़ती थी। निस्कर्ष रूप से हम कह सकते है कि यवनो को भारत में कड़े प्रतिरोध का सामना करना पड़ा। उनको भारत में कई स्थान सफलता प्राप्त न हो सकी। निराश थकी यूनानी सेना के वापस लौटते ही भारत ने पुनः अपनी खोई स्वतंत्रता प्राप्त कर ली।

***व्याख्याता, इतिहास**
शहीद कैप्टन रिपुदमन सिंह राजकीय महाविद्यालय
सवाई माधोपुर (राज.)

संदर्भ ग्रंथः–

(1) के.सी. श्रीवास्तव, प्राचीन भारत का इतिहास व संस्कृति, युनाईटेड बुक डिपो, इलाहबाद, 1914–15, पृष्ठ 138

(2) के.सी. श्रीवास्तव, प्राचीन भारत का इतिहास व संस्कृति, युनाईटेड बुक डिपो, इलाहबाद, 1914–15, पृष्ठ 138

(3) विमल चंद पांडे, प्राचीन भारत का राजनीतिक तथा सांस्कृतिक इतिहास 2002, पृष्ठ 230

(4) विमल चंद पांडे, प्राचीन भारत का राजनीतिक तथा सांस्कृतिक इतिहास 2002, पृष्ठ 230

(5) डॉ हेमचंद राय चौधरी प्राचीन भारत का राजनीतिक इतिहास, किताब महल, इलाहबाद 1912, पृष्ठ 180

(6) प्रो. जी.पी. सिंहल, प्राचीन भारत, रिसर्च पब्लिकेशनल, जयपुर 1990, पृष्ठ 78

(7) विमल चंद पांडे, प्राचीन भारत का राजनीतिक तथा सांस्कृतिक इतिहास 2002, पृष्ठ 231

(8) विमल चंद पांडे, प्राचीन भारत का राजनीतिक तथा सांस्कृतिक इतिहास 2002, पृष्ठ 231

(9) प्रो. जी.पी. सिंहल, प्राचीन भारत, रिसर्च पब्लिकेशनल, जयपुर 1990, पृष्ठ 78

(10) डॉ रमाशंकर त्रिपाठी, प्राचीन भारत का इतिहास, मोतीलाल बनारसीदास नई दिल्ली 1971, पृष्ठ 86

(11) बी.सी. लाहा, प्राचीन भारत का ऐतिहासिक भूगोल, हिन्दी ग्रंथ अकादमी लखनऊ 1972, पृष्ठ 113

(12) विमल चंद पांडे, प्राचीन भारत का राजनीतिक तथा सांस्कृतिक इतिहास 2002, पृष्ठ 233

(13) विमल चंद पांडे, प्राचीन भारत का राजनीतिक तथा सांस्कृतिक इतिहास 2002, पृष्ठ 234

(14) विमल चंद पांडे, प्राचीन भारत का राजनीतिक तथा सांस्कृतिक इतिहास 2002, पृष्ठ 235
(15) विमल चंद पांडे, प्राचीन भारत का राजनीतिक तथा सांस्कृतिक इतिहास 2002, पृष्ठ 236
(16) के.सी. श्रीवास्तव, प्राचीन भारत का इतिहास व संस्कृति, युनाईटेड बुक डिपो, इलाहबाद, 1914–15, पृष्ठ 140
(17) के.सी. श्रीवास्तव, प्राचीन भारत का इतिहास व संस्कृति, युनाईटेड बुक डिपो, इलाहबाद, 1914–15, पृष्ठ 140
(18) डॉ हेमचंद राय चौधरी प्राचीन भारत का राजनीतिक इतिहास, किताब महल, इलाहबाद 1912, पृष्ठ 185
(19) के.सी. श्रीवास्तव, प्राचीन भारत का इतिहास व संस्कृति, युनाईटेड बुक डिपो, इलाहबाद, 1914–15, पृष्ठ 141
(20) डॉ रमेशचन्द मजूगदार, प्राचीन भारत, मोतीलाल बनारसीदास, पृष्ठ 79
(21) विमल चंद पांडे, प्राचीन भारत का राजनीतिक तथा सांस्कृतिक इतिहास 2002, पृष्ठ 239
(22) डॉ हेमचंद राय चौधरी प्राचीन भारत का राजनीतिक इतिहास, किताब महल, इलाहबाद 1912, पृष्ठ 191
(23) के.सी. श्रीवास्तव, प्राचीन भारत का इतिहास व संस्कृति, युनाईटेड बुक डिपो, इलाहबाद, 1914–15, पृष्ठ 141

(1) आदिपर्व 129, 21–22 द्रष्टव्य दीक्षितार, वार इन एंशट इंडिया, पृष्ठ 93
(2) अर्थशास्त्र 2/18
(3) अर्थशास्त्र 2/10
(4) अर्थशास्त्र 2/10
(5) अर्थशास्त्र 2/10
(6) अर्थशास्त्र 2/18
(7) आचार्य प्रियवृत वेदवाचस्पति, प्राचीन भारत में प्रतिरक्षा व्यवस्था, मीनाली प्रकाशन, मेरठ पृष्ठ 149–50
(8) प्राचीन भारतीय युद्ध व्यवस्था, रामसिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन पृष्ठ 106
(9) यजुर्वेद 16/29
(10) कौटिल्य अर्थशास्त्र 2/34/18
(11) खंडहाल जातक 542
(12) प्राचीन भारतीय युद्ध व्यवस्था, रामसिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन 1987, पृष्ठ 110
(13) प्राचीन भारतीय युद्ध व्यवस्था, रामसिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन 1987, पृष्ठ 110
(14) प्राचीन भारतीय युद्ध व्यवस्था, रामसिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन 1987, पृष्ठ 109
(15) अग्निपुरान 100/37

(16) प्राचीन भारतीय युद्ध व्यवस्था, रामसिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन 1987, पृष्ठ 109

(17) अर्थशास्त्र 10/5

(18) प्राचीन भारतीय युद्ध व्यवस्था, रामसिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन 1987, पृष्ठ 109

(19) ऋग्वेद 1.64.10

(20) प्राचीन भारतीय युद्ध व्यवस्था, रामसिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन 1987, पृष्ठ 111

(21) ऋग्वेद 6.75.11

(22) प्राचीन भारतीय युद्ध व्यवस्था, रामसिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन 1987, पृष्ठ 111

(23) रघुवंश 4.41

(24) डॉ नंद किशोर गौतम, महाभारत प्रकाशन जयपुर, पृष्ठ 300